Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 5, MAY - 2022 Publication Date: 31/05/2022

DOIs:10.2018/SS/202205006 --:-- Research Article

छत्तीसगढ़ मे 1857 की क्रांति में राष्ट्रीय चेतना का विकास

डॉ.शंपा चौबे, शाहिना खान

[1] प्राध्यापक, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर
[2] शोध छात्रा, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर

Email ID :- shahinak6848@gmail.com

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदू मुस्लिम दोनों वर्गों का विशेष महत्वपूर्ण योगदान रहा है 19वीं सदी के उत्तरार्ध में धार्मिक विशिष्टता वाद के उभरने के पहले भौगोलिक दृष्टि से राजनीतिक और सामाजिक चिंतन पर काफी असर डाला। विद्यासागर मानवता की सेवा के लिए जो कार्य कर रहे थे उसमें वह मुसलमानों और हिंदुओं में कोई फर्क नहीं करते थे बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय को "श्रेष्ठता का मापदंड धार्मिक विशेषताएं और गुण होना चाहिए ना कि किसी धार्मिक समूह से संबद्धता। (१)

ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत में पहला जुझारू संघर्ष 19वीं शताब्दी के पहले दशक में प्रारंभ हुआ था। रायबरेली के एक मुसलमान सैयद अहमद के नेतृत्व में उत्तर भारत के वहाबी संप्रदाय के अनुयायियों ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ गांव में शहरों में और पहाड़ों से मैदानों तक आधी शताब्दी तक अनवरत संघर्ष चलाया। (२)

ब्रिटिश हुकूमत के अंदर शायद ही कोई ऐसा साल गुजरा होगा जब देश के किसी ना किसी भाग में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह ना हुआ हो।

इतिहास में 1857 का वर्ष है महत्वपूर्ण है । अंग्रेजों की प्रताड़ना से मुक्त होकर अपने राज्यों में शांतिपूर्ण रहना चाहते थे, जाति धर्म का कोई भेदभाव नहीं था, दिल्ली के अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में यह आंदोलन देश में फैला, रोटी और कमल के माध्यम से क्रांति जनित भावनाओं का प्रसार साधु, फकीर, बंजारों के माध्यम से गांव तक हो रहा था।(३)

बुंदेलखंड में रानी लक्ष्मी बाई, गोंडवाना में शंकर शाह, रघुनाथ शाह एवं रानी अवंती बाई, कानपुर में नाना साहब, ग्वालियर मे रानी बैजाबाई, तात्या टोपे, आरा में कुंवर सिंह, मंदसौर में शहजादा फिरोज खान, कानपुर में राजा मदन सिंह, इंदौर में शहादत खान, संबलपुर में सुरेंद्र शाह, छत्तीसगढ़ में जमीदार वीर नारायण सिंह बिंझवार जनहित में संलग्न थे। पर अपने ही विश्वासघातीयों के कारण सफलता की ओर अग्रसर कदम पर बेड़िया पड़ गई ।(४)

सन 1857 की यह पहली जंगे आजादी सैनिक छावनीयो से शुरू होकर देश के तमाम हिस्सों में फैल गई और एकबारगी समूचा मुल्क ही इस आंदोलन में शामिल हो गया ।(५)

हमारे देश में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ पहली लड़ाई सन 1857 में लड़ी गई ।(६)

अगस्त 1857 में सागर और नर्मदा घाटी के समस्त प्रदेश में भी विद्रोह हुआ । इस समय तीसरी देसी इन्फेंट्री के एक बड़े भाग का मुख्यालय रायपुर में रखा गया था। (७)

अगस्त 1856 के प्रारंभ में ही सोनाखान के जमीदार नारायण शंकर दुर्भिक्ष के दौरान जिले के एक गांव में एक व्यापारी के गोदाम में घुस गए और उन्होंने किसानों की आवश्यकता अनुसार अनाज लेकर जनता में बांट दिया। उन्होंने जो कुछ किया, उसके बारे में तुरंत डिप्टी कमिश्नर को दिखा और यह भी लिखा कि किस विचार से प्रेरित होकर उन्होंने ऐसा किया। उसी समय व्यापारी ने भी डिप्टी कमिश्नर को अपने अनाज की हानि के बारे में लिखा। इस स्थिति पर सहानुभूति पूर्वक कार्यवाही करने, डिप्टी कमिश्नर ने तुरंत एक गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया। पुलिस लूटपाट के आरोप में उन्हें पकड़कर रायपुर लाई और जेल में डाल दिया। (८)

1857 में महान क्रांति प्रारंभ हुई रायपुर के लोगों तथा सैनिकों ने प्रतिरोध करने के लिए उन्हें अपना नेता बनाने का निश्चय किया। अगस्त 1857 में संभवत नारायण सी जेल से भाग निकले। सोनाखान पहुंचने पर नारायण सिंह ने प्रतिरोध करने के लिए तैयारी शुरू कर दी। सोनाखान ग्राम को उसके निवासियों सहित खाली कर दिया गया। (९)

सोनाखान पहुंचकर नारायण सिंह ने 500 बंदूकधारियों की एक सेना एकत्रित करने में सफलता पाई। सोनाखान पहुंचने वाले प्रत्येक रास्ते पर जबरदस्त मोर्चाबंदी कर दी। (१०)उसके साथ 7-8 जिंजले थी (११) नारायण सिंह के नेतृत्व में लोगों ने अपनी साम्राज्यवाद के खिलाफ फिर से इरादा बनाया। (१२)

1 दिसंबर 1857 उन्होंने लेफ्टिनेंट स्मिथ को करारी टक्कर दी जिसकी सेना उन्हें गिरे हुए थी, पहले ही हमले में लेफ्टिनेंट को भारी क्षति पहुंचा कर पीछे खदेड़ दिया। बदला लेने की मन स्थिति में अंग्रेजों ने सोनाखान गांव में आग लगा दी। इस अभियान में भटगांव, बिलाईगढ़, तथा देवरी के जमींदारों ने नारायण सिंह के विरुद्ध लेफ्टिनेंट स्मिथ की सहायता की। प्रतिरोध को बेकार समझ कर नारायण सिंह ने समर्पण कर दिया। उन्हें रायपुर लाया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया तथा विद्रोह और राजद्रोह का अपराधी पाया गया। 19 दिसंबर 1857 ईसवी को नारायण सिंह को रायपुर के जय स्तंभ चौक में लाया गया और उन्हें सैनिकों तथा नागरिकों की उपस्थिति में मौत के घाट उतार दिया गया। (१३)

रायपुर में इस पृष्ठभूमि में तीसरी देसी इन्फेंट्री ने जो संभव था बहुत लंबे समय से विद्रोह की तैयारी कर रही थी, 18 जनवरी 1858 की रात विद्रोह कर दिया। रात के समय लगभग 8ः00 बजे देसी इन्फेंट्री की तीसरी रेजीमेंट का सार्जेंट मेजर सिरवेल अपने कमरे में बैठा हुआ था और उसने अपने अनुचर को छुट्टी दी ही थी कि शस्त्रागार लश्कर हनुमान सिंह अपने दो गोलंदाजो के साथ पूरी तरह से हथियारों से लैस होकर अचानक कमरे में आ गया। गोलंदाज तो दरवाजे पर पहरेदारी करते रहे और हनुमान जी ने अपनी तलवार से सार्जेंट मेजर पर घातक प्रहार किया और कुछ देर बाद सार्जेंट मेजर की मृत्यु हो गई। (१४) हनुमान सिंह तुरंत बाहर निकल कर पुलिस फौज को उत्तेजित भाषा में चिल्लाते हुए सभी सिपाहियों को क्रांति में सम्मिलित होने का आह्वान किया। (१५)

6 घंटे के अल्पकालीन प्रयास के बाद 17 लोग गिरफ्तार कर लिए गए। हनुमान सिंह गिरफ्तारी से बच निकले। डिप्टी कमिश्नर चार्ल्स इलियट ने बंदी बनाए सिपाहियों के विरुद्ध तत्काल मुकदमा चलाए जाने की आज्ञा दी। संपूर्ण बंदी बगावत एवं राजद्रोह के अपराध में दंडित किए गए उन्हें मृत्युदंड दिया गया। रायपुर की जनता एवं सैनिकों की उपस्थिति में 22 जनवरी 1858 को प्रात खुलेआम उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। इन 17 व्यक्तियों को ना केवल मौत की सजा हुई बल्कि उनकी, जमीन, जायदाद और जो भी उनके पास था जप्त कर लिया गया। इन वीर शहीदों में सभी जात पात धर्म के लोग थे। में अमर शहीद है। (१६) -1.गौस खान (गाजी खान) हवलदार, 2. अब्दुल हयात-गोलंदाज 3.मुल्लू-गोलंदाज, 4. शिवनारायण- गोलंदाज, 5.पन्नालाल -गोलंदाज, 6. मातादीन, 7. ठाकुर सिंह, 8. अकबर हुसैन, 9 .बल्ली

दुबे, 10. लल्ला सिंह, 11. बुद्धू , 12. परमानंद, 13. शोभाराम, 14. दुर्गा प्रसाद, 15. नजर मोहम्मद, 16. शिव गोविंद, 17. देवीदीन।

रायपुर सैनिक क्रांति में हिंदू-मुसलमान दोनों ही धर्मों के सैनिकों ने हिस्सा लिया। मृत्यु दंड को रायपुर के सैनिकों ने देखा। अतः उनके भीतर सोए विद्रोह अग्नि का भड़क उठना स्वाभाविक ही था।

इतिहास के घटनाक्रम में 1857 का विद्रोह विप्लव आम जनता और सेना के अधिकारियों के सहयोग से देशभक्त, संपन्न जमीदार वर्ग द्वारा विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने और देश की आजादी स्थापित करने की अंतिम प्रयास की सीमा रेखा है।

छत्तीसगढ़ अंचल में 1857 के प्रथम शहीद स्वतंत्र समर के अमर शहीद और वीर नारायण सिंह के परिजन एवं रायपुर के संबंध नागरिकों को ब्रिटिश शासन का कोप भाजन बनना पड़ा उनका संपूर्ण परिवार आर्थिक दृष्टि से तहस-नहस कर दिया गया।(१७)

संदर्भ ग्रंथ :

1. चंद्र विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्लीविश्वविद्यालय, 1990.
2. राय शांति, स्वाधीनता आंदोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका, दिल्ली, 1970.
3. मिश्र रमेन्द्र नाथ एवं लक्ष्मीधर झा, छत्तीसगढ़ का राजनीति एवं सांस्कृतिक इतिहास, सेंट्रल बुक हाउस, 1998.
4. वहीं पूर्वोत्तर.
5. सैयद शाहनवाज अहमद कादरी , लहू बोलता है जंगे आजादी ए हिंद के मुस्लिम किरदार, लोकबंधु राजनारायण के लोग लखनऊ, 2017.
6. हरि ठाकुर, गणतंत्र दिवस विशेषांक, पृष्ठ 5.
7. ग्रोवर बीएल, आधुनिक भारत का इतिहास, नई दिल्ली, 1988.
8. रायपुर जिला गजेटियर, 1992.
9. मध्य प्रदेश संदेश, 17 जून 1967.
10. शंभू दयाल गुरु, शहीद नारायण सिंह सोनाखान, मध्यप्रदेश संदेश स्वाधीनता आंदोलन विशेषांक, अ-33.
11. प्रसाद गोकुल, रायपुर रश्मि, 1925.
12. मिश्र रमेन्द्र नाथ, वीर नारायण सिंह, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकैडमी ,1998.
13. मध्य प्रदेश संदेश, 17 जून ,1967
14. छत्तीसगढ़ डिवीजन रिकॉर्ड , 1957 की जिल्द, 16.
15. मिश्र रमेद्र नाथ, वीर नारायण सिंह ,मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकैडमी, 1998.
16. मिश्र रमेन्द्र नाथ, वीर नारायण सिंह , मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकैडमी, 1998.